इकाई 19 गणराज्यवाद

इकाई की रूपरेखा

19.0 उद्देश्य
19.1 प्रस्तावना
19.2 गणराज्यवाद राजतंत्र के विपरीतार्थी के रूप में
  19.2.1 राजतंत्र एक शासन प्रणाली के रूप में
  19.2.2 निरपेक्ष राजतंत्र की बुराइयाँ
  19.2.3 राजतंत्र से गणराज्यवाद तक
19.3 गणराज्यवाद एक शासन प्रणाली के रूप में
  19.3.1 गणराज्यवाद का अर्थ
  19.3.2 गणराज्यवादी शासन प्रणाली : इसकी विशेषताएँ
  19.3.3 लोकतंत्र और गणराज्यवाद की तुलना
19.4 गणराज्यवाद की शक्तियाँ और कमज़ोरियाँ
  19.4.1 गणराज्यवाद के गुण
  19.4.2 गणराज्यवाद की कमज़ोरियाँ
19.5 गणराज्यवादी प्रवृत्तियाँ
19.6 सारांश
19.7 शब्दावली
19.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
19.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

19.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य एक शासन प्रणाली के रूप में गणराज्यवाद की धारणा की व्याख्या करना, उसकी प्रमुख विशेषताएँ बताना, उसमें और राजतंत्र में अंतर करना तथा लोक-शासन पर आधारित सरकार के सिद्धान्त और जनता के अकारय अधिकारों पर आधारित स्वतंत्रता के सिद्धान्त, दोनों से उसका संबंध स्थापित करना है।

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात्, आपः

- गणराज्यवादी शासन के अर्थ को स्पष्ट कर सकेंगे;
- मनमाने शासन पर आधारित राजतांत्रिक, निरंकुश और तानाशाह व्यवस्थाओं से उसका अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- लोकतांत्रिक और लोक-शासन की प्रणाली से उसका संबंध स्पष्ट कर सकेंगे; और
- उदारवादी राजनीतिक सिद्धान्त के ढाँचे में उसकी शक्तियों और कमज़ोरियों का आकलन कर सकेंगे।

19.1 प्रस्तावना

सरकार प्रशासन सुनिश्चित करती है और प्रशासन का अर्थ बाह्य जीवन के सुव्यवस्थित सामाजिक संबंधों की स्थापना है। सरकारों का रूप चाहे जो हो, वे अपनी जनता को एक सुव्यवस्थित शासन प्रदान करती हैं। यह बात राजतंत्र के बारे में उतनी ही सच है जितनी लोकतंत्र के बारे में। यहाँ तक कि तानाशाह सरकारें भी अपनी जनता को शांति, व्यवस्था और प्रशासन प्रदान करने के दावे करती हैं। सरकार के अनेक रूपों में अंतर करने वाली चीज वह प्रशासन नहीं है जो वे अपनी जनता को प्रदान करती हैं। यह काम तो हर तरह की सरकार करती है। उनमें अंतर इस बात को लेकर होता है कि उनका गठन किस प्रकार होता है, अपनी जिन आंतरिक ढाँचागत संस्थाओं के

माध्यम से वे काम करती हैं उनमें उनका संबंध किस तरह का है, उनसे किस प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति की आशा की जाती है, आदि।

राजनीतिक विचारकों व विद्धानें ने समय-समय पर सरकारों के वर्गीकरण के प्रयास किए हैं। अरस्तू के बाद शासन के अनेक वर्गीकरण सामने आए हैं। इन श्रेणियों और वर्गों का चलते-चलते हवाला देना कुछ गलत नहीं होगाः राजतंत्र, कुलीनतंत्र, राज्य-व्यवस्थाः राजंतत्र या निरंकुशता; कुलीनतंत्र या अल्पतंत्र; राज्य-व्यवस्था या लोकतंत्र; राजतांत्रिक (निरपेक्ष व संविधानिक, दोनों) और गणराज्य; धर्म-निरपेक्ष और धर्म-आधारित; लोकतांत्रिक और तानाशाह; संसदीय, राष्ट्रपतीय या दोनों का संयोग; एकात्मक, संघीय और महासंघीय; उदार, उदार-लोकतांत्रिक और समाजवादी - मार्क्सवादी। सरकार का हर रूप यह स्पष्ट करता है कि वह अपनी जनता पर किस प्रकार शासन करती है।

इन शासन प्रणालियों में से एक गणराज्यवाद है जो लोक-शासन, बहुमतवाद, जनता की संप्रभुता, अकारय अधिकारों, सीमित शासन और संविधानवाद के सिद्धान्तों पर आधारित होता है। उद्‌गम की दृष्टि से यह राजतंत्र का विपरीतार्थी दिखाई देता है पर यह उससे बढ़कर भी कुछ है। आधुनिक अर्थों में गणराज्यवाद एक तरफ शासन का एक सिद्धान्त है तो दूसरी तरफ जनता की स्वतंत्रताओं का भी एक सिद्धान्त है। इसमें एक लोकतांत्रिक प्रणाली की भावना निहित है जो लोकशाही और वैयक्तिक स्वतंत्रता का समन्वय है। संक्षेप में यह ऐसी प्रणाली है जिसे सही तौर पर अनेकों उदार राजनीतिक रूपों से जोड़ा जा सकता है। इनमें अन्य के अलावा संसदीय शासन, राष्ट्रपतीय प्रणाली, मूलगामी लोकतंत्र और सीमित शासन शामिल हैं। संवेदनशीलता और जवाबदेही इसके बुनियादी मानक हैं।

लोकतांत्रिक मूल्यों संबंधी विश्वास और सरोकार गणराज्यवाद की शक्तियाँ हैं। दूसरी ओर उसकी कमज़ोरी उसकी अस्पष्टता है उसमें शासन के अनेकों रूप शामिल हैं जो प्रायः एक दूसरे के विरोधी होते हैं।

ऊपर दी गई संक्षिप्त रूपरेखा से आप पर यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि गणराज्यवाद शासन के हर उस रूप से जुड़ी लोकतांत्रिक संवृत्ति (फेनामिजन) है जो एक लोकतांत्रिक प्रणाली अपनाने का दावा करता है। जिन लोगों पर ऐसी सरकार का नियंत्रण लागू होता है उनके प्रति जवाबदेह और संवेदनशील होना इसका सार तत्व है। इसका महत्व स्वशासन की प्रणाली, बुद्धि पर आधारित शासन, बहुमत के सिद्धान्त और एक प्रभुतासंपन्न शासक जैसा व्यवहार करने का जनता के अधिकार में निहित है। आगे बढ़ने पर हमें इस बारे में कुछ और पढ़ेंगे।

19.2 गणराज्यवाद राजतंत्र के विपरीतार्थी के रूप में

गणराज्यवाद के विचार को राजतांत्रिक व्यवस्थाओं के विरोध से उत्पन्न दिखाया जा सकता है। ऐतिहासिक अर्थ में राजतंत्र का अर्थ मात्र एक वंशगत शासन नहीं है जिसमें राजकुमार या राजकुमारी को अपने शासक पिता या माता से राज्य उत्तराधिकार में मिलता है। यह परम शक्तियों से संपन्न एक व्यक्ति का शासन होता है जिस पर कोई और अंकुश या नियंत्रण नहीं होता। गणराज्यवाद का उदय निरपेक्ष राजतांत्रिक प्रणालियों के विरोध में नहीं, उनके विपरीतार्थी के रूप में ही सही, हुआ और इसमें जनता को निश्चित नियमों पर आधारित शासन प्रदान करने का वचन दिया गया। एक व्यक्ति के शासन रूपी राजतंत्र के विपरीत गणराज्यवाद कानून का शासन सुनिश्चित करता है। राजतंत्र निरंकुशता को बल पहुँचाता है, गणराज्यवाद संविधानिकता को।

19.2.1 राजतंत्र एक शासन प्रणाली के रूप में

राजतंत्र दुनिया की सबसे पुरानी राजनीतिक संस्था है। यह शासन का वह रूप है जिसमें सर्वोच्च सत्ता वास्तव में या कहने के लिए राजा के हाथों में होती है। 'जब राजा की सत्ता कानूनों से बंधी नहीं होती तो यह निरपेक्ष या निरंकुश राजतंत्र होता है और जब उसकी सत्ता इस प्रकार कानूनों से बंधी होती है तो यह **संविधानिक** राजतंत्र होता है।' ऐतिहासिक रूप से राजतंत्र का अर्थ किसी

राजा या रानी का निरपेक्ष शासन है। गणराज्यवाद का उदय निरंकुश राजतंत्र की प्रतिक्रिया था हालांकि संविधानिक राजतंत्र का विचार रूप में न सही, सारतत्व में गणराज्यवादी सरकार के विचार से मेल खाता है।

राजतंत्र शासन का वह रूप है जिसमें एक पुश्तैनी शासक का राज्य होता है और वह शासन का निरपेक्ष शासक होता है। राजतंत्र की खास विशेषता यह है कि यह खानदानी होता हैः एक ही राजवंश अनेकों पीढ़ियों तक शासन करता रहता है। राजा जब तक मारा या सत्ताच्युत नहीं किया जाता, तब तक शासन करता रहता है। वह परम शक्तियों का उपयोग करता है। कोई उसकी सत्ता को चुनौती नहीं दे सकता, उसे जवाबदेह नहीं ठहरा सकता। इस तरह राजतंत्र का विचार निरपेक्ष शासन का विचार है। **इसमें राजा की शक्तियाँ ईश्वार-प्रदत्त मानी जाती हैं और उसे केवल ईश्वर के आगे जवाबदेह कहा जाता है।** राजा के दैवी अधिकारों का सिद्धान्त निरंकुश शासक के राज्य के रूप में राजतंत्र के विचार को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है।

राजतंत्र में प्रशासन राजा के हाथों में होता है जो प्रायः खानदानी होता है। इसका आधार यह सिद्धान्त है कि प्रशासन एक विशेष वंश का विशेषाधिकार है और केवल राजा ही जानता है कि उसकी प्रजा के हित में सबसे अच्छी बात क्या है। राजा को कानून बनाने की शक्तियाँ इसीलिए प्राप्त होती हैं। प्रायः उसका कहा हुआ ही कानून होता है, वहीं उन्हें लागू करता है और केवल वहीं अपने बनाए कानूनों का हनन करने वालों के लिए दंड का निश्चय करता है।

राजतंत्र की खास विशेषता राजा की शक्तियाँ हैं। ये प्रायः निरपेक्ष होती हैं और जनता से व्युत्पन्न नहीं होतीं। इसलिए वह जो कुछ करता है उसके लिए जनता के आगे जवाबदेह नहीं होता। राजतंत्र में राजा और प्रजा का संबंध शासक और शासित का, प्रभुत्वशाली राजा और मूक-बधिर प्रजा का संबंध होता है। राजतंत्र में जहाँ निरपेक्षवाद प्रशासन की प्रमुख विशेषता होता है, जनता को अधिकार प्राप्त नहीं होते, उसके सिर्फ कर्तव्य होते हैं। जनता की स्थिति नागरिकों की नहीं, प्रजा की होती है।

राजतंत्र का अर्थ राजा की निरपेक्ष और सर्वस्ववादी शक्तियाँ हैं। ये इस अर्थ में निरपेक्ष होती हैं कि इनकी कोई सीमा नहीं होती और इस अर्थ में सर्वस्ववादी होती हैं कि राजा जैसा भी चाहे, कानून जारी कर सकता है। इस तरह राजतंत्र सर्वाधिकारवाद और निरपेक्षवाद का दूसरा नाम है जिसमें जनता सिर्फ साधन होती है, उसका अपना कोई उद्देश्य नहीं होता।

19.2.2 निरपेक्ष राजतंत्र की बुराइयाँ

राजतंत्र की निरपेक्ष प्रकृति अनेक प्रकार से बदनाम है। यह पूरी तरह अतीत की वस्तु है। कोई इसकी पैरवी नहीं करता, न इसकी प्रशंसा करता है। उसके दुर्गुण उसके गुणों पर हावी हैं। चरित्र से पुश्तैनी होने के नाते राजतंत्र बेतुकी चीज होता है। आनुवांशिकता का सिद्धान्त यह सुनिश्चित नहीं करता कि राजा अच्छा ही होगा। इतिहास में ऐसे अनेकों राजा गुजरे हैं जो मनमाने और क्रूर थे। बुद्धि और सुचरित्र एक से दूसरी पीढ़ी को चलते जाएँगे, यह विश्वास ही हास्यास्पद है। **टामस पेन** ने एक बार बहुत सही कहा थाः 'एक पुश्तैनी गवर्नर वैसा ही बकवास है जैसे एक पुश्तैनी लेखक।'

राजतंत्र में शासक की निरपेक्षता एक बड़ी बुराई होती है। जो व्यक्ति किसी के आगे जवाबदेह न हो उसके लिए शक्तियों के व्यवहार में निरंकुश होना स्वाभाविक है। सत्ता ऐसे व्यक्ति को भ्रष्ट करती है और असीम सत्ता असीम भ्रष्ट करती है। निरपेक्ष शासन से आगे क्रूर शासन ही आता है। निरपेक्ष राजतंत्र एक भेदभाव की व्यवस्था में फलता-फूलता है जिसमें महत्व केवल जी-हजूरी का होता है।

सर्वाधिकारवाद और निरपेक्षता में चोली-दामन का साथ होता है। निरपेक्ष प्रणाली सर्वाधिकारवादी और सर्वाधिकार प्रणाली निरपेक्ष होती है। राजतंत्र निरपेक्ष व सर्वाधिकारवादी, दोनों होता है। राजा के पास असीम शक्तियाँ ही नहीं होतीं बल्कि ऐसी सत्ता भी होती है जो केवल असीम ही नहीं,

संपूर्ण भी होती है। प्रजा पर राजा का पूरा-पूरा अधिकार होता है; इसका आदेश उन सभी क्षेत्रों पर चलता है जहाँ उसका शासन होता है।

निरपेक्ष राजतंत्र अलोकतांत्रिक होता है। वास्तव में यह बुनियादी तौर पर एक अलोकतांत्रिक धारणा है। राजा न जनता द्वारा निर्वाचित होता है, न उसके आगे जवाबदेह होता है। इतिहास गवाह है कि राजा निरंकुश ढंग से अपना राज्य चलाता है और उसे व्यापक शक्तियाँ प्राप्त होती हैं - लोगों की जिंदगी और मृत्यु पर भी। एक राजा का विचार लोकतंत्र के विचार का सीधे-सीधे विरोधी होता है। राजा न तो संवेदनशीलता की बात जानता है न जवाबदेही की। यह ग़ैर-जिम्मेदाराना, फासीवादी कार्यनीतियों वाला एक सर्वाधिकारवादी शासन होता है।

हालांकि अब निरपेक्ष राजतंत्र का विचार प्रचलित नहीं है पर निरपेक्ष राजतंत्र की भर्त्सना की जाती रही है और बहुत बुरी तरह की जाती रही है। उसके आनुवांशिकता के सिद्धानत की निंदा की गई है और उसके निरंकुश शासन को कोसा गया है। राजतंत्र को केवल प्रभाव-संपन्न और शक्तियों से वंचित प्रणाली के रूप में प्रस्तुत करने के सभी प्रयासों को, जो आधुनिक काल में दिए जाते रहे हैं, कुछ खास समर्थन नहीं मिला है। राजतंत्र को एक अ-आधुनिक बल्कि मध्यकालीन विचार माना जाता है।

19.2.3 राजतंत्र से गणराज्यवाद तक

पश्चिमी समाजों में राजतंत्र से गणराज्यवाद में संक्रमण एक जैसा और हमेशा सुचारू नहीं रहा। ग्रेट ब्रिटेन में अंग्रेजों ने स्वयं को गणराज्यवादी घोषित किए बिना मैग्ना कार्टा (1215), अधिकारों की याचिका (1628) और अधिकार विधेयक (1689) के ज़रिये तथा हाउस ऑफ कॉमंस का लोकतंत्रीकरण करके, स्थानीय स्वशासन संबंधी कानून आदि बनाकर राजा की निरंकुश शक्तियों में कटौती की और लोकतांत्रिक बन बैठे। ब्रिटेन कई सदियों के एक लंबे काल में गणराज्यवादी बने बिना एक लोकतंत्र के रूप में उभरा। दूसरी ओर फ्रांस में गणराज्य में संक्रमण 1789 की क्रांति के द्वारा, राजतंत्र की संस्था का उन्मूलन करके हुआ। दूसरे यूरोपीय देशों, उदाहरण के लिए जर्मनी ओर इटली (1840) में, गणराज्य में संक्रमण तीव्र और बढ़ते राष्ट्रवाद का परिणाम था जबकि रूस में प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) और समाजवादी क्रांति (1917) जैसी घटनाओं ने राजतंत्र का उन्मूलन किया।

राजतंत्र से गणराज्य में वास्तविक संक्रमण से बहुत पहले ही राजनीतिक विश्लेषक गणराज्य के ध्येय की पैरवी करने लगे थे। प्राचीन रोमन गणराज्य के प्रति अपने प्रशंसा-भाव के कारण **मैकियावेली** (1469-1527) ने एक प्रकार के गणराज्य को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। उनका तर्क था कि गणराज्य पैट्रीशियनों और जनता के बीच तनावों को दूर करने का सबसे अच्छा रास्ता था और स्वशासन से युक्त स्वाधीनता केवल एक गणराज्यवादी शासन में संभव है। **मोंतेस्क्यू** (1689-1755) ने राजतंत्र की निंदा की कि यह निरंकुश शासन स्थापित करता है तथा जनता को उनके अधिकारों व स्वाधीनतों से वंचित करता है। उन्होंने एक प्रकार कीसंसदीय व उदार सरकार की जमानत के तौर पर शक्तियों के अलगाव का तर्क दिया। जन्म से ब्रिटिश क्रांतिकारी **टामस पेन** (1737-1809) ने केवल जमकर राजतंत्र का विरोध ही नहीं किया बल्कि जोश के साथ गणराज्य के ध्येय का समर्थन भी किया। उनका उद्देश्य जनता की संप्रभुता के साथ वैयक्तिक अधिकारों के विचार का समन्वय करना था। संविधानिक गणराज्यवाद के प्रतिपादक **जेम्स मेडिसन** (1751-1836) ने एक सीमित प्रकार के शासन की जमानत के रूप में राजनीतिक स्वाधीनता की पैरवी की। उन्होंने 'शक्ति से शक्ति पर अंकुश' की बात सोची और इसलिए संविधानिक सरकार के किसी भी रूप में संघवाद, दो-सदनी व्यवस्था और शक्तियों के अलगाव के सिद्धान्तों को अपनाए जाने का समर्थन किया।

बोध प्रश्न 1

नोटः क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) राजतंत्र की परिभाषा और इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए। (उत्तर दस पंक्तियों तक सीमित रखें।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) राजतांत्रिक शासन प्रणाली क्या है? इसकी बुराइयाँ बताइए। (उत्तर दस पंक्तियों तक सीमित रखें।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) पश्चिम में राजतंत्र से गणराज्य में संक्रमण की संक्षिप्त रूपरेखा दीजिए। (उत्तर दस पंक्तियों तक सीमित रखें।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

19.3 गणराज्यवाद एक शासन प्रणाली के रूप में

ऐतिहासिक दृष्टि से गणराज्यवाद का जन्म निरंकुश व निरपेक्ष राजतंत्र की प्रतिक्रिया के स्वरूप हुआ। पर गणराज्यवाद की परिभाषा राजतंत्र के विपरीतार्थी के रूप में करना उसके अर्थ को बहुत सीमित करना है। गणराज्य वह शासन प्रणाली हैं जिसमें राज्य का एक निर्वाचित प्रमुख होता है और साथ में ऐसी सरकार होती है जो जनता की इच्छा व संप्रभुता को व्यक्त करे। स्वतंत्रता के एक सिद्धान्त के रूप में यह व्यक्तियों के अधिकारों, उनकी स्वाधीनताओं, कानून के शासन, मुक्त प्रेस और निष्पक्ष व मुक्त शिक्षा प्रणाली को सुनिश्चित करता है। उस सीमा तक गणराज्यवाद लोकतंत्र का एक और नाम है पर केवल उसके एक रूप के तौर पर।

19.3.1 गणराज्यवाद का अर्थ

जहाँ राजतंत्र का अर्थ एक राजा का शासन है जिसका निश्चय वंशगत आधार पर और केवल जन्म के संयोग से होता है, वहीं **गणराज्य ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें राज्य का प्रमुख कोई राजा नहीं, जनता से आने वाला कोई व्यक्ति होता है**। राजतंत्र जहाँ वंशगत होता है वहीं गणराज्य अधिकतर **निर्वाचित** होता है। राजतंत्र में राजा का शासन उसके जीवनपर्यंत चलता है पर गणराज्य एक **समयबद्ध शासन प्रणाली है** और एक गणराज्य का शासक एक विशेष अवधि के लिए ही राज्य का प्रमुख होता है। जहाँ राजा को असीम और समस्त शक्तियाँ प्राप्त होती हैं वहीं गणराज्य के **शासक को वे ही शक्तियाँ प्राप्त होती हैं जो उन्हें संविधान या सुनिश्चित नियमों से मिलती हैं**। राजतंत्र शासन की एक संवेदनहीन और ग़ैर-जवाबदेह प्रणाली है तो गणराज्य को संवेदी और उत्तरदायी ढंग से काम करना पड़ता है। राजतंत्र राजा की प्रजा के कुछ कर्तव्य मात्र जानता है, पर **गणराज्यवाद जनता के अधिकारों व स्वाधीनताओं पर जोर देता है**। इस तरह गणराज्य वह शासन प्रणाली है जिसमें शक्ति सीमित होती है, जो शासित जनता के प्रति संवेदनशील और उत्तरदायी होती है, जनमत के अनुसार काम करती है, जनता के लिए अधिकारों व स्वाधीनताओं की एक व्यवस्था सुनिश्चित करती है तथा शासित जनता को प्रजा नहीं, नागरिक मानती है। **द मैक्वेरियो डिक्शनरी** के अनुसार यह 'ऐसा राज्य है जिसमें सर्वोच्च सत्ता मताधिकार से संपन्न नागरिकों के समुदाय में निहित होती है तथा उसका व्यवहार उनके द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष ढंग से निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता है।' एक ओर लोकशाही पर जोर तथा दूसरी ओर वैयक्तिक स्वाधीनताएँ सुनिश्चित करने वाली एक विशेष प्रकार की स्वतंत्रता पर जोर गणराज्यवाद का केन्द्रीय तत्व है।

राजतंत्र से भिन्न, गणराज्यवाद ऐसी शासन प्रणाली है जिसमें राज्य का प्रमुख साधारण जनता से आता है और प्रायः जनता द्वारा निर्वाचित होता है। यह नियमों का शासन है जो संविधानवाद पर आधारित होता है और उसी के माध्यम से कार्य करता है। यह वह प्रशासन है जिसमें व्यक्ति की स्वाधीनता सुनिश्चित होती है और जनता के लाभार्थ उसके हितों का ध्यान रखा जाता है। यह लोकतंत्र के साथ पैदा हुआ और उसी के साथ फलता-फूलता है। गणराज्यवाद लोकतंत्र के ढाँचे में सटीक बैठता है हालांकि लोकतंत्र गणराज्यवाद से आगे भी बहुत कुछ होता है।

19.3.2 गणराज्यवादी शासन प्रणाली : इसकी विशेषताएँ

गणराज्यवादी शासन का अर्थ बहुसंख्य जनता द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार प्रत्यक्ष और वैयक्तिक रूप से कार्य कर रही जनता का शासन है। इस शासन प्रणाली की प्रशंसा में **टामस जेफरसन** ने कहा था: 'गणराज्यवादी प्रणाली ही शासन का वह सर्वोत्तम रूप है जो आज तक जनता के अधिकारों की रक्षा के लिए विकसित किया गया है।' वे आगे कहते हैं: 'पूर्ण न होते हुए भी यह जनता को आवाज़ प्रदान करता है और उसे अधिकार देता है कि जब वह सरकार को गलत दिशा में बढ़ते देखें तो उसे सुधारें।' अपनी प्रकृति में ही तथा राजतंत्र के विपरीत गणराज्यवादी शासन एक सीमित शासन होता है। यह इस अर्थ में सीमित होता है कि इसके कार्यकलाप सीमित होते हैं (अर्थात् यह सर्वाधिकारवादी राज्य नहीं होता।) और इसलिए इसकी शक्तियाँ भी सीमित होती हैं। यह उस सीमा तक सीमित होता है जहाँ तक ऊर्ध्व ढंग से शासन के अन्य स्तर (उदाहरण

के लिए अगर यह एक संघ है तो घटक राज्य) और क्षैतिज़ ढंग से शासन के अनेकों अंग उसकी शक्तियों में भागीदार होते हैं।

गणराज्यवादी शासन इस अर्थ में लोकतांत्रिक होता है कि शासन करने वाले जनता के प्रतिनिधि होते हैं जो या तो किसी अन्य की जगह या एक सीमित अवधि के लिए निर्वाचित होते हैं। इतना ही नहीं, वे अपने निर्वाचकों के आगे उत्तरदायी भी होते हैं। यह इसलिए लोकतांत्रिक होता है क्योंकि यह एक निर्वाचित, उत्तरदायी और संवेदनशील शासन होता है। यह इसलिए लोकतांत्रिक होता क्योंकि यह जनता का शासन होता हैः वह जब चाहती है, इसे बनाती है और जब चाहती है, इसे बदल देती है। यह इसलिए लोकतांत्रिक है क्योंकि गणराज्यवादी सरकारें जनता की इच्छा की मूर्त रूप होती हैं और उसी को लागू करने की इच्छा रखती हैं। **बेंजामिन आरिस्टिन** को एक पत्र में **ज़ेफरसन** ने लिखा थाः 'एक प्रातिनिधिक (और इसलिए गणराज्यवादी) शासन ऐसा शासन है जिसमें जनता की इच्छा एक प्रभावी तत्व होगी।' गणराज्यवादी शासन मूलतः वहाँ तक लोकतांत्रिक शासन होता है जहाँ तक उसके हर सदस्य को उसके सरोकारों के बारे में बराबर की आवाज प्राप्त हो। एक गणराज्य किस चीज से बनता है? **ज़ेफरसन** का यह कहना ठीक ही है कि 'अपनी पहुँच और अपनी क्षमता के अंदर आने वाले विषयों में वैयक्तिक रूप से नागरिकों की तथा दूसरे सभी विषयों में उनके तात्कालिक रूप से चुने गए और उनके द्वारा हटाए जा सकने वाले प्रतिनिधियों की कार्रवाई एक गणराज्य का सारतत्व है।'

गणराज्यवादी शासन प्रणाली शासन का एक सिद्धान्त प्रस्तुत करती है - एक सरकार जो लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित हो; जो प्रातिनिधिक, उत्तरदायी और संवेदनशील हो, जो जनता की इच्छा पर आधारित और उसी के माध्यम से व्यक्त हो। ऐसा शासन जनता के अधिकारों व स्वाधीनताओं का एक सिद्धान्त प्रस्तुत करता है। गणराज्यवाद तथा स्वाधीनता के सिद्धान्त का चोली-दामन का साथ है। गणराज्यवाद के समर्थक इस बात पर जोर देते हैं कि मनुष्य के अधिकार शासन के सिद्धान्तों के आधार हैं। ज़ेफरसन कहते हैंः 'गणराज्य शासन की वह प्रणाली है जो मानवजाति के अधिकारों के खिलाफ शाश्वत रूप से किसी खुले या छिपे युद्ध से संलग्न नहीं है।' मोंतेस्क्यू को उद्धृत करते हुए वे अपना यह विचार व्यक्त करते हैंः 'गणराज्यवादी शासन प्रणालियों में मनुष्य समान होते हैं; समान वे क्रूर शासन प्रणालियों में भी होते हैं। पहली में इसलिए कि वे ही सब कुछ होते हैं; दूसरी में इसलिए के वे कुछ नहीं होते।'

एक गणराज्यवादी शासन प्रणाली की बुनियादी विशेषताओं को संक्षेप में इस प्रकार रखा जा सकता हैः

1) गणराज्यवादी शासन प्रत्यक्ष रूप से या प्रतिनिधियों के ज़रिये जनता का शासन होता है;

2) यह वह शासन है जो अपने निर्माताओं के प्रति उत्तरदायी होता है;

3) यह चरित्र से प्रतिनिधिक तथा जनता की इच्छा के प्रति संवेदनशील शासन होता है;

4) यह सीमित कार्यों और सीमित शक्तियों वाला शासन होता है;

5) यह ऊर्ध्व दृष्टि से सीमित शासन होता है क्योंकि क्षेत्रीय व स्थानीय स्तरों की सरकारें उसकी शक्तियों में भागीदार होती हैं और क्षैतिज़ दृष्टि से भी सीमित शासन होता है क्योंकि शासन के विधायी, कार्यपालक और न्यायिक अंग उसकी शक्तियों का उपयोग करते हैं;

6) जैसा कि कहा गया, गणराज्यवाद शासन का एक सिद्धान्त है; यह उस सीमा तक स्वतंत्रता का एक सिद्धान्त भी है जहाँ तक यह जनता के अधिकारों व स्वाधीनताओं का प्रावधान करता है, जनता के अधिकार व स्वाधीनताएँ सुनिश्चित करता है और इससे इनके संरक्षण का वादा करता है।

19.3.3 लोकतंत्र और गणराज्यवाद की तुलना

लोकतंत्र वह सब कुछ है जो गणराज्यवाद है पर गणराज्यवाद पूरा का पूरा लोकतंत्र नहीं है। गणराज्यवादी शासन लोकतंत्र का एकरूप है हालांकि यह आवश्यक नहीं कि हर लोकतांत्रिक शासन गणराज्यवादी हो। ब्रिटेन में लोकतंत्र है पर उसका शासन गणराज्यवादी नहीं है। अनेकों संविधानिक राजतंत्र लोकतांत्रिक हैं पर वे गणराज्यवादी नहीं हैं।

लोकतंत्र और गणराज्यवाद की निकटता से इंकार नहीं किया जा सकता। दोनों का उद्देश्य जनता की संप्रभुता स्थापित करना है; दोनों का चरित्र प्रातिनिधिक होता है; दोनों मनुष्य के व्यक्तित्व का सम्मान मानव-विकास के मापदंड के रूप में करते हैं; दोनों मनुष्य के अधिकारों व स्वाधीनताओं को उसकी प्रगति के लिए अनिवार्य मानते हैं; दोनों निर्वाचित सरकार को जनमत के प्रति संवेदनशील मानते हैं; दोनों शासित के प्रति शासक की जवाबदेही पर जोर देते हैं।

पर फिर भी बहुत कुछ है जो गणराज्यवाद और लोकतंत्र में भेद करता है। लोकतंत्र अल्पमत पर बहुमत का शासन है जिसमें व्यक्ति के और अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए सुरक्षा के उपाय नहीं होते। गणराज्य भी बहुमत का शासन होता है पर लोकतंत्र के असीमित बहुमत के विपरीत यह एक सीमित बहुमत होता है। गणराज्य अल्पसंख्यकों के और व्यक्ति के अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है। लोकतंत्र सर्वशक्तिसंपन्न बहुमत का शासन है जिसमें उसकी असीमित शक्तियों के मुकाबले कोई सुरक्षा प्राप्त नहीं होती। यह बहुमत की असीम निरंकुशता होती है। गणराज्यवाद बहुमत का शासन सुनिश्चित करता है पर उस बहुमत का जो स्वयं ही नियंत्रित है। यह एक प्रातिनिधिक चरित्र वाला निरंतर सीमित शासन होता है - ऐसा शासन जो संशोधनों के जरिये परिवर्तनीय हो, जिसमें शक्तियाँ तीन अंगों अर्थात् विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच विभाजित हों और हर अंग बाकी दो अंगों को नियंत्रित करे ताकि सभी अंग परस्पर संतुलित रहें। स्वतंत्रता के एक सिद्धान्त के रूप में गणराज्यवाद अधिकारों, व्यक्ति के अकारय अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

एक गणराज्यवादी और एक लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के बीच एक बुनियादी अंतर होता है। गणराज्य एक प्रातिनिधिक शासन है जिसमें कानूनों का, मिसाल के लिए संविधान का, शासन होता है दूसरी ओर एक लोकतंत्र (प्रत्यक्ष रूप से या प्रतिनिधियों के जरिये) बहुमत का और कुछ लोगों की राय में भीड़ का शासन होता है। एक गणराज्यवादी व्यक्ति के अकाट्य अधिकारों को मान्यता देता है जबकि लोकतंत्रों का सरोकार सिर्फ इससे होता है कि जनता के लिए, मिसाल के लिए उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए या लोक-कल्याण के लिए, क्या किया जा सकता है। एक गणराज्यवादी शासन वह है जिसमें सत्ता जनता द्वारा सार्वजनिक अधिकारियों के निर्वाचन से व्युत्पन्न होती है, और ये व्यक्ति जनता के सर्वोत्तम प्रतिनिधि होते हैं। एक लोकतंत्र जनता का शासन होता है और इसलिए उसमें सत्ता जन-सभा से व्युत्पन्न होती है। गणराज्यवादी शासन में कानून संबंधी दृष्टिकोण सुनिश्चित सिद्धान्तों और नियमों के अनुसार न्याय के प्रशासन का दृष्टिकोण होता है। लोकतंत्रों में कानून के प्रति यह दृष्टिकोण होता है कि बहुमत की इच्छा का वर्चस्व हो। गणराज्यवाद स्वाधीनता, बुद्धि और न्याय जैसे जीवन मूल्यों को जन्म देता है जबकि लोकतंत्र राग-द्वेष, पूर्वाग्रह और असंतोष पैदा करता है।

बोध प्रश्न 2

नोटः क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) राजतंत्र और गणराज्यवाद में अंतर कीजिए। (उत्तर दस पंक्तियों तक सीमित रखें।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) गणराज्यवाद से आपका क्या अभिप्राय है? इसकी प्रमुख विशेषताएँ बताइए। (उत्तर दस पंक्तियों तक सीमित रखें।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि गणराज्यवादी शासन प्रणाली लोकतंत्र का एक रूप है? (उत्तर दस पंक्तियों तक सीमित रखें।)

.....

.....

.....

.....

.....

4) गणराज्यवाद से लोकतंत्र की तुलना करें। (उत्तर दस पंक्तियों तक सीमित रखें।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

19.4 गणराज्यवाद की शक्तियाँ और कमज़ोरियाँ

गणराज्यवाद एक 'मानक' शासन प्रणाली है जो पूरी दुनिया में पाई जाती है। लोकतांत्रिक प्रणालियों को अपनाने वाले समाजों ने मज़बूरी से अधिक अपनी इच्छा से गणराज्यवाद को अपनाया है। कारण यह है कि गणराज्यवाद अनेक समाजों को लफ्फाजी से तथा निरंकुशता या भीड़तंत्र (माबोक्रेसी) की खतरनाक अतियों से बचने में सहायता देता है। अमेरिकी संविधान के निर्माता गणराज्यवादी शासन प्रणाली की शक्तियों से अच्छी तरह परिचित थे। अमेरिकी संविधान की धारा 4 का खंड 4 स्पष्ट रूप से 'इस संघ के प्रत्येक राज्य के लिए एक गणराज्यवादी शासन प्रणाली की ज़मानत देता है।'

19.4.1 गणराज्यवाद के गुण

गणराज्यवाद के गुण बहुत महत्वपूर्ण हैं। हालांकि यह बहुमत का शासन होता है, पर यह बहुमत अपने आप में सीमित होता है। गणराज्यवाद का प्रमुख उद्देश्य सख्ती से बहुमत को नियंत्रित करके उसे पहले से स्थापित नियमों, पहले से बने संविधान की सीमाओं में रखना है। गणराज्यवाद निर्वाचित सदस्यों का शासन है और उस सीमा तक लोकतांत्रिक होता है, पर ये निर्वाचित प्रतिनिधि वे हैं जो अपने निर्वाचकों का प्रतिनिधित्व करने योग्य हैं, जो एक विशेष अवधि के लिए निर्वाचित होते हैं तथा जो निर्वाचकों के प्रति जवाबदेह और संवेदनशील, दोनों होते हैं।

गणराज्यवादी शासन एक लोकतांत्रिक शासन से अधिक भी कुछ होता है। लोकतांत्रिक शासन बहुमत का शासन होता है। इसके विपरीत गणराज्य ऐसा शासन होता है जो बहुमत का शासन तो होता है पर यह बहुमत नियमों के अनुसार शासन करता है। इसलिए गणराज्यवाद निरंकुश शासन के, बहुमत की निरंकुशता के, उसके निरपेक्ष वर्चस्व के खिलाफ ज़मानत देता है। यह जनसमूह के शासन के खिलाफ भी सुरक्षा प्रदान करता है जो बहुमत के माध्यम से सक्रिय होते हुए राग-द्वेष और पूर्वाग्रहों से संचालित हो सकता है। इसलिए अमेरिकियों ने 1798 में ही स्पष्ट कर दिया था कि वे एक लोकतंत्र की नहीं, एक गणराज्य की स्थापना कर रहे हैं।

गणराज्यवादी शासन सीमित होता है: ऊर्ध्व दिशा में इस तरह सीमित शक्तियाँ केन्द्र तथा क्षेत्रीय स्थानीय इकाइयों के बीच विभाजित होती हैं, और क्षैतिज़ दिशा में इस तरह सीमित शक्तियाँ शासन के तीनों अंगों के बीच विभाजित होती हैं। इस तरह यह शक्तियों के अलगाव के सिद्धान्त तथा प्रतिबंधों और संतुलन के सिद्धांत, दोनों के आधार पर काम करता है। गणराज्यवादी शासन के पीछे कार्यरत विचार यह है कि शासन का हर अंग निरंकुश और निरपेक्ष हुए बिना काम करता है।

गणराज्यवादी शासन केवल एक शासन का सिद्धांत नहीं, स्वतंत्रता का एक सिद्धान्त भी प्रस्तुत करता है। यह हर व्यक्ति के लिए उसके अधिकार सुनिश्चित करता है क्योंकि यह उन अधिकारों का हनन से सुरक्षित रखने की व्यवस्था करता है। गणराज्यवादी शासन में व्यक्ति और अल्पसंख्यकों के अधिकारों की कारगर सुरक्षा की जाती है।

19.4.2 गणराज्यवाद की कमज़ोरियाँ

गणराज्यवाद की सीमाएँ भी कुछ कम नहीं है। गणराज्यवादी शासन में लोकतांत्रिक बनने की प्रवृत्ति होती है। चरित्र में प्रातिनिधिक होने के कारण गणराज्यवादी और लोकतांत्रिक, दोनों प्रणालियाँ राजनीतिक दलों की एक व्यवस्था के जरिये काम करती हैं। एक दलीय व्यवस्था की संस्कृति न तो गणराज्य की संस्कृति है और न लोकतंत्र की। प्रकृति से राजनीतिक दल सख्त अनुशासन वाले संगठन होते हैं और लोकतांत्रिक होने का दावा करते हैं, पर प्रायः अलोकतांत्रिक होते हैं। राजनीतिक दलों की एक व्यवस्था के माध्यम से कार्यरत एक गणराज्यवादी शासन बहुमत से संपन्न एक दल का शासन बन जाता है। अमेरिका समेत सभी गणराज्यवादी प्रणालियाँ दलीय व्यवस्था के माध्यम से और उसके ढाँचे में काम करती हैं। राजनीतिक दल गणराज्यों समेत सरकारों को प्रभावित नहीं करते, यह मानना कठिन है। लोकतांत्रिक प्रणाली की तरह गणराज्यवादी प्रणाली

नियमों नहीं बल्कि दलों से संचालित होती है। जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि उन राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि बन जाते हैं जिनसे वे जुड़े होते हैं। व्यवहार में वे अपने निर्वाचकों को नहीं, अपने राजनीतिक दलों के प्रति जवाबदेह होते हैं।

गणराज्यवाद एक अस्पष्ट शब्द बन गया है। एक विशेष प्रकार की राजनीतिक प्रणाली से नहीं बल्कि अनेक प्रणालियों से इसका संबंध हो सकता है। इनमें एक ओर एक सीमित राजतंत्र वाली संसदीय प्रणाली है तो दूसरी ओर एक सीमित सरकार वाली राष्ट्रपतीय प्रणाली शामिल हैं। कुछ लेखकों ने तो गणराज्यवाद को मूलगामी लोकतंत्र का पर्याय कहा है।

कहा जाता है कि गणराज्यवाद ने शासन के एक सिद्धान्त के अलावा स्वतंत्रता का एक सिद्धान्त भी प्रस्तुत किया है। इसका स्वतंत्रता का सिद्धान्त सचमुच मतिभ्रम पैदा करने वाला है क्योंकि यह कभी तो स्वतंत्रता के एक सकारात्मक सिद्धान्त की और कभी एक नकारात्मक सिद्धान्त की पैरवी करता है।

गणराज्यवाद एक बड़ी सीमा तक सिद्धान्त में अस्पष्ट है और इसके राजनीतिक प्रस्ताव अनिश्चित हैं।

बोध प्रश्न 3

नोटः क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) गणराज्यवाद के गुणों का संक्षेप में वर्णन करें। (उत्तर दस पंक्तियों तक सीमित रखें।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) आपकी राय में गणराज्यवाद की क्या-क्या कमज़ोरियाँ हैं? (उत्तर पाँच पंक्तियों तक सीमित रखें।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

19.5 गणराज्यवादी प्रवृत्तियाँ

आज गणराज्यवाद एक अद्वितीय गतिशील धारणा है। यह अपने शास्त्रीय रूप से अलग है। शास्त्रीय गणराज्यवाद का संबंध शासन के सिद्धान्त से था जबकि आधुनिक गणराज्यवाद ने इसमें स्वतंत्रता का एक सिद्धान्त भी जोड़ा है। आज की प्रवृत्ति यह है कि इसमें कुछ और अर्थात् एक नागरिकता का सिद्धान्त भी जोड़ा जाए। गणराज्यवाद ऐसी नागरिकता का प्रस्ताव करना चाहता है जो केवल उनके अधिकारों से नहीं, उनके कर्तव्यों से भी, अपने राज्य के प्रति उनके दायित्वों से भी जुड़ी हुई हो।

गणराज्यवाद अब स्थानीय स्तर से आगे बढ़कर राष्ट्रीय और भूमंडलीय स्तर पर कार्यरत है। आज यह क्षेत्रीय स्तर तक सीमित नहीं है; राष्ट्रीय सरकारें भी तेज़ी से गणराज्यवादी प्रणाली को अपना रही है। आशा है जल्द ही पूरी दुनिया गणराज्यवाद को अपनाएगी।

गणराज्यवाद अपने नैतिक सरोकार भी दिखा रहा है। उस सीमा तक यह जन-भावना, सम्मान और देशभक्ति जैसे नागरिक गुणों में व्यक्त हो रहा है। इसका आकर्षण यह है कि यह व्यक्तिवादी उदारवाद का विकल्प प्रस्तुत करता है। यह इसलिए लुभाता है क्योंकि यह एक प्रकार के नागरिक मानववाद का प्रतिपादन करता है और वैयक्तिक उपलब्धि के स्रोत के रूप में सार्वजनिक क्षेत्र की पुनर्प्रतिष्ठा करता है।

बोध प्रश्न 4

नोटः क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) गणराज्यवाद की उभरती प्रवृत्तियों को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए। (उत्तर दस पंक्तियों तक सीमित रखें।)

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

19.6 साराश

गणराज्यवाद उस सीमा तक एक शासन का सिद्धान्त है जहाँ तक यह एक प्रातिनिधिक, उत्तरदायी और संवेदनशील शासन की स्थापना का प्रयास करता है। वहाँ तक यह स्वतंत्रता का एक सिद्धान्त है जहाँ तक यह जनता के अधिकारों व स्वाधीनताओं का प्रावधान करता और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करता है। वहाँ तक यह नागरिकता का सिद्धान्त है जहाँ तक यह एक विशेष प्रकार की नागरिकता के लिए कार्यरत है जो सक्रिय सार्वजनिक जीवन से तथा राष्ट्र के लिए सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार रहने की देशभक्तिपूर्ण भावना से जुड़ी होती है। संक्षेप में, गणराज्यवादी एक ओर सार्वजनिक और लोकप्रिय शासन पर तथा दूसरी ओर प्रशासन चलाने के लिए सुस्थापित

नियमों पर जोर देते हैं। यह एक लोकतांत्रिक शासन से आगे भी बहुत कुछ है क्योंकि यह बहुमत नहीं, नियमों के आधार पर काम करता है। इस तरह यह ऐसे बहुमत का शासन है जिसकी शक्तियाँ सीमाबद्ध होती हैं और जो शक्तियों का व्यवहार भी सीमाओं के अंदर करता है।

19.7 शब्दावली

अकाट्य अधिकार : ऐसे महत्वपूर्ण और पवित्र अधिकार जो आपातकालीन अवस्था को छोड़कर किसी भी परिस्थिति में छीने न जा सकें।

अधिकार विधेयक : 1688 की क्रांति के बाद 1689 में इंग्लैण्ड के राजा/रानी द्वारा हस्ताक्षरित एक चार्टर जो यह व्यवस्था करता था कि इसके बाद राजा संसद की सलाह के अनुसार काम करेगा।

कुलीन तंत्र : ऐसी सरकार या राज्य जिस पर एक विशेषाधिकारों से संपन्न वर्ग का शासन हो; थोड़े से श्रेष्ठ माने जाने वाले लोगों से बनी और शासित सरकार।

क्रांति : किसी समाज में शासन के स्वरूप या जनता के जीवन में किसी परिवर्तन को क्रांति कहते हैं।

गणराज्य : ऐसा राज्य जिसमें सर्वोच्च सत्ता मताधिकार से संपन्न नागरिक समुदाय में निहित हो और उसका व्यवहार नागरिकों द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चुने गए प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता हो; ऐसा राज्य जिसका प्रमुख प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित हो।

तानाशाही : ऐसा राज्य जिसमें सभी शक्तियाँ एक तानाशाह के हाथों में हो और जो जनता के आगे जवाबदेह न हो।

धर्म-आधारित राज्य : शासन की ऐसी प्रणाली या रूप जिसमें राजनीति पर धर्म का वर्चस्व हो; इसमें सरकार पर तत्ववादियों का नियंत्रण होता है।

धर्मनिरपेक्ष राज्य : शासन की ऐसी प्रणाली या रूप जिसमें धर्म और राजनीति एक दूसरे से अलग हों; इसमें राजनीति में धर्म की भूमिका नहीं होती।

निरपेक्ष शासन : शासन की संपूर्ण और असीमित शक्तियों का व्यवहार।

निरंकुश शासन : ऐसी सरकार जिसमें शासकगण नियम-कायदों की परवाह किए बिना मनमाने ढंग से शासन करते हों।

भीड़तंत्र : अशिक्षित जनता का, भीड़ का, जनसमूह का शासन।

मानववाद : चिंतन या कर्म की ऐसी प्रणाली जिसमें मानवीय हितों, जीवन मूल्यों, गरिमा आदि को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

मैग्ना कार्टा : इंग्लैण्ड में स्वाधीनताओं का ऐसा महान घोषणापत्र जिसे अंग्रेज बैरनों ने 1215 में सम्राट जान से बलपूर्वक प्राप्त किया।

राजतंत्र : ऐसा राज्य या सरकार जिसमें सर्वोच्च सत्ता वास्तव में या कहने भर के लिए एक पुश्तैनी राजा में निहित हो।

राष्ट्रपतीय प्रणाली : ऐसी शासन प्रणाली जिसमें कार्यपालिका विधायिका में से नहीं चुनी

जाती और उसके आगे जवाबदेह नहीं होती। शासन के ये दोनों अंग एक दूसरे से स्वतंत्र होते हैं।

लोकतंत्र : जनता **का**, जनता **के द्वारा**, और जनता **के लिए** शासन।

शासन व्यवस्था : ऐसी शासन प्रणाली जिसमें जनता स्वयं के लिए शासन करती है। अरस्तू ने इसे लोकतंत्र का शुद्ध रूप माना था।

सर्वाधिकारवाद : ऐसी सरकार या राज्य जिसमें हर काम शासक वर्ग करता है। प्रायः ऐसी प्रणाली एकाधिकारवादी शासन को जन्म देती है।

संघ : यह केन्द्र की दिशा में या विपरीत दिशा में गठित एक राजनीतिक इकाई है। इसमें एक ओर संघीय या केन्द्रीय सरकार होती है जो अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली होती है और दूसरी ओर संघ बनाने वाली इकाइयों की अपेक्षाकृत कम शक्तिशाली सरकारें होती हैं।

संसदीय प्रणाली : ऐसी शासन प्रणाली जिसमें कार्यपालिका और विधायिका का आपस में घनिष्ठ संबंध होता है। इसमें कार्यपालिका विधायिका में से ही आती है और उसके प्रति जवाबदेह होती है।

स्वतंत्रता : बंधन की अपेक्षा स्वाधीनता की दशा; बाह्य नियंत्रण से मुक्ति; अपने ढंग से अपने कार्यों का निश्चय करने की शक्ति।

19.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ओल्डफील्ड, ए (1990) : *सिटिजनशिप एंड कम्युनिटी : सिविक रिपब्लिकनिज्म एंड द माडर्न वर्ल्ड*, लंदन व न्यूयार्कः रुटलेज

पेटिट, पी. (1977) : *रिपब्लिकनिज्मः ए थ्योरी ऑफ फ्रीडम एंड गवर्नमेंट*, आक्सफर्डः आक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

लर्नर, आर. (1987): *द थिंकिंग रिवाल्यूशनरी : प्रिंसिपुल एंड प्रेक्टिस इन द न्यू रिपब्लिक*, इथाका, न्यूयार्क, कार्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस।

19.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) उपभाग 19.2.1 देखें।
2) उपभाग 19.2.2 देखें।
3) उपभाग 19.2.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 19.3.1 देखें।
2) उपभाग 19.3.2 देखें।
3) उपभाग 19.3.3 देखें।
4) उपभाग 19.3.3 देखें।

बोध प्रश्न 3

1) उपभाग 19.4.1 देखें।
2) उपभाग 19.4.2 देखें।

बोध प्रश्न 4

1) भाग 19.5 देखें।